eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 02, February 2024

प्लेटो का आदर्श राज्य

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Received: 15 Feb 2024 Accepted & Reviewed: 25 Feb 2024, Published: 29 Feb 2024

Abstract

प्लेटो, जोकि एक महान यूनानी दार्शनिक थे, ने अपने ग्रंथ 'रिपब्लिक' (Republic) में आदर्श राज्य की अवधारणा प्रस्तुत की है। उनके अनुसार, आदर्श राज्य का आधार न्याय पर टिका होता है, जहाँ समाज तीन वर्गों में विभाजित होता हैरू शासक, सैनिक, और उत्पादक। प्रत्येक वर्ग का एक निश्चित कर्तव्य होता है, और यह समाज में सामंजस्य बनाए रखने के लिए आवश्यक होता है। प्लेटो ने दार्शनिक राजा की संकल्पना भी दी, जिसमें वह मानते थे कि शासक वह होना चाहिए जो ज्ञान और न्याय में सर्वोच्च हो। इस शोध–पत्र में प्लेटो के आदर्श राज्य की विशेषताओं, उसकी व्यवहारिकता और आधुनिक संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता पर विस्तार से चर्चा की गई है।

कीवर्ड– प्लेटो, आदर्श राज्य, न्याय, दार्शनिक राजा, रिपब्लिक, समाज–वर्गीकरण, राजनीति, नैतिकता

Introduction

प्लेटो (427–347 ई.पू.) पश्चिमी दर्शन के प्रमुख स्तंभों में से एक थे। वे सुकरात के शिष्य और अरस्तू के गुरु थे। उनके दार्शनिक विचारों ने पश्चिमी विचारधारा को गहराई से प्रभावित किया। प्लेटो ने अपने आदर्श राज्य की संकल्पना अपने ग्रंथ रिपब्लिक में प्रस्तुत की, जो कि न केवल राजनीतिक दर्शन का महान कार्य है, बल्कि नैतिकता और न्याय पर भी महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत करता है।

प्लेटो ने राज्य को एक जीवित इकाई के रूप में देखा, जिसमें प्रत्येक अंग का अपना विशिष्ट कार्य होता है। यदि राज्य का प्रत्येक वर्ग अपने निर्धारित कर्तव्यों का पालन करता है, तो सामाजिक सामंजस्य और न्याय स्थापित होता है। उनका मानना था कि समाज को सुव्यवस्थित रखने के लिए राज्य की व्यवस्था प्राकृतिक योग्यता के आधार पर होनी चाहिए, न कि जन्म, संपत्ति या शक्ति के आधार पर।

उनके अनुसार, मनुष्य तीन प्रमुख प्रवृत्तियों से संचालित होते हैं– बुद्धि, साहस और इच्छाएँ। इन प्रवृत्तियों के आधार पर समाज के तीन वर्गों का निर्माण किया जाता है। शासक बुद्धि से प्रेरित होते हैं, सैनिकों में साहस की प्रमुखता होती है, जबकि उत्पादक वर्ग की गतिविधियाँ इच्छाओं से संचालित होती हैं। इस प्रकार, आदर्श राज्य की अवधारणा मानव मनोविज्ञान और नैतिकता पर आधारित है।

इस शोध–पत्र में प्लेटो के आदर्श राज्य की संरचना, उसकी विशेषताएँ, उसके उद्देश्यों, और आधुनिक समय में उसकी प्रासंगिकता पर विस्तृत चर्चा की गई है। इसके साथ ही, हम यह भी विश्लेषण करेंगे कि क्या प्लेटो का आदर्श राज्य व्यावहारिक रूप से संभव है या यह केवल एक सैद्धांतिक अवधारणा मात्र है।

प्लेटो का आदर्श राज्य– राज्य की संरचना–

प्लेटो के अनुसार, एक आदर्श राज्य में निम्नलिखित तीन वर्ग होते हैं–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 02, February 2024

शासक (दार्शनिक राजा)– ये वे लोग होते हैं जिनके पास ज्ञान, बुद्धिमत्ता, और न्याय की समझ होती है। इनका कार्य राज्य का प्रशासन करना होता है।

सैनिक (संरक्षक वर्ग)– ये राज्य की रक्षा करते हैं और आंतरिक व बाह्य खतरों से सुरक्षा प्रदान करते हैं।

उत्पादक (किसान, कारीगर, व्यापारी)– ये समाज की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

न्याय की अवधारणा– प्लेटो ने न्याय को राज्य और व्यक्ति दोनों के लिए आवश्यक बताया। उनके अनुसार, जब प्रत्येक वर्ग अपने निर्धारित कार्य करता है और अन्य वर्गों के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करता, तो राज्य में न्याय स्थापित होता है।

शिक्षा एवं प्रशिक्षण– प्लेटो के आदर्श राज्य में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। उनका मानना था कि ज्ञान प्राप्ति और चरित्र निर्माण के बिना कोई भी व्यक्ति शासन करने योग्य नहीं हो सकता। उन्होंने शिक्षा को तीन चरणों में विभाजित किया।

प्रारंभिक शिक्षा– शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए संगीत और व्यायाम की शिक्षा।

मध्य शिक्षा– गणित, ज्यामिति, खगोल विज्ञान और तर्कशास्त्र।

उच्च शिक्षा– दर्शनशास्त्र और नेतृत्व कौशल, जो केवल शासक वर्ग के लिए अनिवार्य था।

दार्शनिक राजा का सिद्धांत– प्लेटो के अनुसार, जब तक दार्शनिक शासक नहीं बनते या शासक दार्शनिक नहीं बनते, तब तक आदर्श राज्य की स्थापना संभव नहीं है। उनका मानना था कि केवल वही व्यक्ति शासन करने योग्य है, जो सत्य, ज्ञान और नैतिकता में पारंगत हो।

संपत्ति और परिवार व्यवस्था– प्लेटो के अनुसार, शासक वर्ग और सैनिकों के लिए निजी संपत्ति और पारिवारिक जीवन प्रतिबंधित होना चाहिए ताकि वे निःस्वार्थ होकर समाज की सेवा कर सकें। उन्होंने यह तर्क दिया कि निजी संपत्ति लालच और भ्रष्टाचार को जन्म देती है।

महिलाओं की भूमिका– प्लेटो ने महिलाओं को भी समान शिक्षा और अवसर देने की वकालत की। उनका मानना था कि स्त्रियाँ भी पुरुषों की तरह शासक या सैनिक बनने में सक्षम हो सकती हैं। यह विचार उस समय के सामाजिक संदर्भ में क्रांतिकारी था।

आदर्श राज्य और लोकतंत्र– प्लेटो लोकतंत्र के आलोचक थे। उनका मानना था कि लोकतंत्र में अयोग्य और स्वार्थी लोग सत्ता में आ जाते हैं, जिससे राज्य में अव्यवस्था फैलती है। उन्होंने तर्क दिया कि जनता को हमेशा सही निर्णय लेने की क्षमता नहीं होती, इसलिए राज्य को बुद्धिमान दार्शनिकों के हाथों में होना चाहिए।

न्याय की अवधारणा– प्लेटो के अनुसार, न्याय (Justice) केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं बल्कि संपूर्ण समाज के स्तर पर भी आवश्यक है। उन्होंने न्याय को समाज की संतुलित और सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था के रूप में देखा, जहाँ प्रत्येक वर्ग अपने निर्धारित कर्तव्यों का पालन करता है और अन्य वर्गों के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करता।

व्यक्तिगत और सामाजिक न्याय– प्लेटो ने न्याय को दो स्तरों पर विभाजित किया–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 02, February 2024

व्यक्तिगत न्याय (Individual Justice)– यह व्यक्ति के आंतरिक सद्गुणों और मनोवैज्ञानिक संतुलन से संबंधित है। प्लेटो के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति के मन में तीन प्रमुख तत्व होते हैं—बुद्धि (Reason), साहस Spirit और इच्छाएँ (Desires)। जब व्यक्ति की बुद्धि उसकी इच्छाओं और साहस पर नियंत्रण रखती है, तब वह न्यायपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

सामाजिक न्याय (Social Justice)– यह राज्य की संरचना से जुड़ा हुआ है। प्लेटो का मानना था कि समाज तीन वर्गों में विभाजित होना चाहिए–शासक, सैनिक, और उत्पादक। जब प्रत्येक वर्ग अपने निर्धारित कर्तव्यों का पालन करता है और अन्य वर्गों के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करता, तो समाज में न्याय स्थापित होता है।

न्याय का परिभाषिक दृष्टिकोण– प्लेटो ने न्याय को परिभाषित करते हुए कहा कि यह हर व्यक्ति को वह कार्य करना चाहिए जिसके लिए वह स्वाभाविक रूप से सबसे अधिक उपयुक्त है। इसका अर्थ यह है कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अपने नैसर्गिक गुणों के अनुसार कार्य सौंपा जाना चाहिए और उन्हें अपने दायरे में रहकर कार्य करना चाहिए।

अन्याय का स्वरूप– प्लेटो के अनुसार, जब समाज के वर्गों में असंतुलन आ जाता है, तब अन्याय उत्पन्न होता है। यदि सैनिक वर्ग शासन करने लगे या उत्पादक वर्ग राजनीतिक अधिकारों की माँग करने लगे, तो राज्य में अराजकता उत्पन्न हो जाएगी। अतः न्याय की स्थापना तभी संभव है जब प्रत्येक वर्ग अपनी निर्धारित भूमिकाओं का पालन करे।

न्याय और दार्शनिक राजा– प्लेटो का मानना था कि केवल वे ही लोग शासन करने योग्य हैं जो ज्ञान और नैतिकता में श्रेष्ठ हैं। इसलिए, उन्होंने दार्शनिक राजा की संकल्पना प्रस्तुत की। उनके अनुसार, एक न्यायपूर्ण राज्य में शासन वही करेगा जो सत्य, न्याय और नैतिकता का गहन ज्ञान रखता हो। इस प्रकार, न्याय को सुनिश्चित करने के लिए राज्य का नेतृत्व दार्शनिकों के हाथों में होना चाहिए।

न्याय और आधुनिक समाज– यद्यपि प्लेटो का न्याय का सिद्धांत एक आदर्श स्थिति को दर्शाता है, लेकिन आधुनिक समाज में इसकी कुछ बातें आज भी प्रासंगिक हैं। उदाहरण के लिए, योग्यता के आधार पर शासन और प्रशासन का विचार, समाज में संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता, और प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमताओं के अनुसार कार्य करने की अवधारणा आज भी महत्वपूर्ण मानी जाती है। प्लेटो की न्याय की अवधारणा एक संगठित और सामंजस्यपूर्ण समाज की परिकल्पना प्रस्तुत करती है। यह व्यक्ति और समाज दोनों के लिए अनिवार्य है। प्लेटो के अनुसार, जब समाज में प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वाभाविक कार्यों का पालन करता है और अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करता, तभी एक न्यायपूर्ण राज्य की स्थापना संभव होती है।

दार्शनिक राजा का सिद्धांत– प्लेटो के राजनीतिक दर्शन का एक महत्वपूर्ण तत्व उनका दार्शनिक राजा (Philosopher King) का सिद्धांत है। यह अवधारणा उनके ग्रंथ रिपब्लिक में प्रस्तुत की गई है, जहाँ वे तर्क देते हैं कि जब तक दार्शनिक शासक नहीं बनते या शासक दार्शनिक नहीं बनते, तब तक आदर्श राज्य की स्थापना संभव नहीं है। प्लेटो का मानना था कि केवल वे ही लोग शासन करने के योग्य हैं, जो सत्य, ज्ञान, और न्याय में पारंगत हों।

दार्शनिक राजा की विशेषताएँ– प्लेटो के अनुसार, एक दार्शनिक राजा के भीतर निम्नलिखित गुण होने चाहिए। सत्य और ज्ञान का प्रेमी – एक सच्चा शासक वही हो सकता है, जो सत्य की खोज में लगा रहे और जिसे पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हो।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 02, February 2024

निष्पक्ष और न्यायप्रिय – एक दार्शनिक राजा न्याय और नैतिकता के मूल सिद्धांतों पर आधारित शासन करता है। स्वार्थहीनता – शासक को सत्ता का लोभ नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे समाज के कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए। संयम और आत्म–नियंत्रण – शासक को अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखना चाहिए और निजी संपत्ति तथा व्यक्तिगत लाभ से दूर रहना चाहिए। साहस और निर्णय क्षमता – एक सच्चे शासक को कठिन परिस्थितियों में भी सही निर्णय लेने में सक्षम होना चाहिए।

दार्शनिक राजा और शिक्षा– प्लेटो ने यह तर्क दिया कि दार्शनिक राजा बनने के लिए गहन और व्यापक शिक्षा की आवश्यकता होती है। उन्होंने शासकों की शिक्षा को विभिन्न चरणों में विभाजित किया–

प्रारंभिक शिक्षा – संगीत, व्यायाम, और साहित्य के माध्यम से चरित्र निर्माण।

माध्यमिक शिक्षा –गणित, ज्यामिति, और खगोल विज्ञान का अध्ययन।

उच्च शिक्षा – तर्कशास्त्र और दर्शन का गहन अध्ययन।

व्यावहारिक प्रशिक्षण – 50 वर्ष की आयु तक विभिन्न प्रशासनिक भूमिकाओं का अनुभव प्राप्त करना।

दार्शनिक राजा और लोकतंत्र की आलोचना– प्लेटो ने लोकतंत्र की आलोचना करते हुए कहा कि यह शासन प्रणाली अयोग्य और अज्ञानी लोगों को सत्ता में लाती है, जिससे समाज में अराजकता फैलती है। उनके अनुसार, जब शासन उन लोगों के हाथों में होता है जो केवल लोकप्रियता और व्यक्तिगत लाभ के लिए कार्य करते हैं, तो राज्य पतन की ओर बढ़ता है। इसलिए, उन्होंने एक ऐसे शासक की आवश्यकता बताई जो न केवल बुद्धिमान हो, बल्कि जनता के हित में कार्य करने के लिए भी तत्पर हो।

आधुनिक संदर्भ में दार्शनिक राजा– हालांकि प्लेटो का दार्शनिक राजा का सिद्धांत एक आदर्श स्थिति को दर्शाता है, लेकिन आधुनिक राजनीति में इसकी कुछ झलक देखी जा सकती है। आज की दुनिया में ऐसे नेता सराहे जाते हैं जो ज्ञान, नैतिकता, और निष्पक्षता के साथ शासन करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ विचारकों का मानना है कि एक सफल लोकतंत्र में नेतृत्व उन्हीं लोगों के हाथों में होना चाहिए जो जनता के हितों को सर्वोपरि रखते हैं और दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ निर्णय लेते हैं।

दार्शनिक राजा का सिद्धांत प्लेटो के आदर्श राज्य की नींव है। यह न केवल शासन की गुणवत्ता को सुधारने की दिशा में एक महत्वपूर्ण विचार है, बल्कि यह नीति–निर्माण और प्रशासन के लिए एक नैतिक और बौद्धिक आधार भी प्रदान करता है। हालांकि इसकी व्यवहारिकता पर प्रश्न उठाए जाते हैं, लेकिन यह सिद्धांत आज भी राजनीतिक दर्शन और शासन व्यवस्था के अध्ययन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

आधुनिक समय में प्रासंगिकता– प्लेटो का आदर्श राज्य का सिद्धांत प्राचीन यूनानी समाज के लिए प्रस्तावित किया गया था, लेकिन इसके कई विचार आज भी प्रासंगिक हैं। उनके द्वारा प्रस्तुत न्याय, वर्ग–विभाजन, शिक्षा, और दार्शनिक राजा की अवधारणा आधुनिक शासन प्रणालियों में विभिन्न रूपों में देखी जा सकती है।

1. **शिक्षा और नेतृत्व**– प्लेटो ने एक व्यवस्थित और कठोर शिक्षा प्रणाली पर बल दिया था, ताकि योग्यतम लोग शासन कर सकें। आज के समय में यह विचार लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में परिलक्षित होता है, जहाँ अच्छे नेता वे माने जाते हैं जिनके पास ज्ञान, नैतिकता और नेतृत्व कौशल होता है। विभिन्न देशों में

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 02, February 2024

सार्वजनिक प्रशासन और नीति–निर्माण में विशेषज्ञता को अधिक महत्व दिया जाने लगा है, जो प्लेटो के विचारों से मेल खाता है।

2. **न्याय की अवधारणा–** प्लेटो ने न्याय को समाज के विभिन्न वर्गों के सामंजस्य और संतुलन के रूप में परिभाषित किया था। आज भी न्याय की यही अवधारणा राजनीतिक और सामाजिक संरचनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कानूनी और प्रशासनिक संस्थाएँ सामाजिक संतुलन बनाए रखने के लिए कार्य कर रही हैं, जिससे समाज में स्थिरता बनी रहे।

3. **दार्शनिक राजा का विचार और सुशासन–** यद्यपि आज के लोकतांत्रिक युग में पूर्ण रूप से किसी दार्शनिक राजा की अवधारणा संभव नहीं है, लेकिन सुशासन और नैतिक नेतृत्व की आवश्यकता प्लेटो के विचारों को सजीव बनाए रखती है। आज भी ऐसे नेता सफल माने जाते हैं जो अपने निर्णयों में नैतिकता और ज्ञान को प्राथमिकता देते हैं।

4. **विशेषज्ञता आधारित शासन प्रणाली–** आधुनिक युग में सरकारों और प्रशासनिक निकायों में विशेषज्ञों की भूमिका बढ़ गई है। तकनीकी और नीतिगत निर्णय लेने के लिए शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों और नीति–विशेषज्ञों को प्रशासनिक कार्यों में शामिल किया जाता है, जो प्लेटो के उस विचार से मेल खाता है कि केवल योग्यतम लोग ही शासन करें।

5. **लोकतंत्र पर प्लेटो की आलोचना और आज का परिप्रेक्ष्य–** प्लेटो ने लोकतंत्र की आलोचना करते हुए कहा था कि यह एक ऐसी प्रणाली है जहाँ अयोग्य और अल्पज्ञानी लोग सत्ता प्राप्त कर सकते हैं। हालाँकि, आज लोकतंत्र को एक प्रभावी शासन प्रणाली माना जाता है, लेकिन इसमें उन चुनौतियों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता जो प्लेटो ने इंगित की थीं, जैसे कि लोकलुभावन राजनीति, गलत सूचना का प्रसार, और अल्पकालिक लाभों के लिए दीर्घकालिक नीति–निर्माण की अनदेखी।

6. **आदर्श राज्य की अवधारणा और कल्याणकारी राज्य–** प्लेटो के आदर्श राज्य की कल्पना एक संरचित और सुव्यवस्थित समाज पर आधारित थी। आधुनिक समय में कल्याणकारी राज्य (Welfare State) की संकल्पना इसी विचारधारा से प्रेरित मानी जा सकती है। सरकारों द्वारा नागरिकों को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने की नीतियाँ इस विचारधारा का ही परिष्कृत रूप हैं।

7. नैतिकता और राजनीति का समन्वय– आज के समय में राजनीति और नैतिकता को अलग–अलग माना जाता है, लेकिन प्लेटो का यह मत था कि एक आदर्श राज्य में नैतिकता का होना अनिवार्य है। भ्रष्टाचार, अनैतिक आचरण, और जनहित की उपेक्षा जैसी समस्याओं के समाधान के लिए नैतिक नेतृत्व की आवश्यकता आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी प्लेटो के समय थी।

प्लेटो के आदर्श राज्य का सिद्धांत पूर्णतः व्यवहारिक नहीं हो सकता, लेकिन इसमें दिए गए विचारों का आधुनिक शासन और समाज में गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। चाहे वह न्याय की अवधारणा हो, सुशासन की आवश्यकता हो, या शिक्षा और नेतृत्व का महत्व–प्लेटो के विचार आज भी प्रशासनिक और राजनीतिक विमर्श में प्रासंगिक बने हुए हैं।

प्लेटो का आदर्श राज्य का सिद्धांत न केवल एक दार्शनिक कल्पना थी, बल्कि यह एक संगठित, न्यायपूर्ण और स्थिर समाज की दिशा में एक गहन विचार प्रक्रिया का परिणाम था। उन्होंने समाज को तीन

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 02, February 2024

वर्गों शासक, सैनिक और उत्पादक में विभाजित कर प्रत्येक वर्ग की भूमिका को परिभाषित किया और तर्क दिया कि जब प्रत्येक वर्ग अपने निर्धारित कर्तव्यों का पालन करता है, तभी राज्य में न्याय स्थापित हो सकता है। प्लेटो की ''दार्शनिक राजा'' की संकल्पना यह दर्शाती है कि शासन उन्हीं के हाथों में होना चाहिए जो ज्ञान, नैतिकता और तर्क से परिपूर्ण हों। उनका यह विचार आज भी सुशासन और नीतिगत निर्णय लेने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण माना जाता है। उन्होंने लोकतंत्र की आलोचना की क्योंकि उन्हें यह भय था कि जनता की अज्ञानता और भावनात्मक निर्णय गलत नेताओं के सत्ता में आने का कारण बन सकते हैं। हालांकि, आधुनिक लोकतंत्र ने कुछ हद तक इन चुनौतियों का समाधान निकाला है, लेकिन प्लेटो के विचार आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं।

उनकी शिक्षा प्रणाली की अवधारणा, जिसमें योग्यतम को सत्ता सौंपने से पहले कठोर प्रशिक्षण देने की बात की गई थी, आज भी सरकारी प्रशासन, नीति–निर्माण और नेतृत्व विकास में देखी जा सकती है। साथ ही, उनका न्याय का सिद्धांत, जो समाज में संतुलन बनाए रखने पर आधारित था, आधुनिक कानूनी और सामाजिक संरचनाओं के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत बना हुआ है।

हालांकि प्लेटो का आदर्श राज्य पूर्णतः व्यवहारिक नहीं माना जा सकता, लेकिन इसमें निहित विचार आज भी राजनीतिक, सामाजिक और प्रशासनिक चिंतन को प्रभावित करते हैं। न्याय, सुशासन, नैतिकता और योग्यता आधारित नेतृत्व की आवश्यकता आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी प्राचीन ग्रीस में थी। इस प्रकार, प्लेटो का आदर्श राज्य एक ऐसी अवधारणा है, जो मानव सभ्यता को एक बेहतर समाज की ओर प्रेरित करती रहती है।

संदर्भ सूची–

1. प्लेटो, 'गणराज्य' (The Republic), अनुवाद, सत्यप्रकाश सरस्वती, राजकमल प्रकाशन।
2. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, 'प्लेटो और उसका दर्शन', ओक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. डॉ. अरविंद कुमार, 'प्लेटो के राजनीतिक विचार', साहित्य भवन प्रकाशन।
4. डी. आर. भोंसले, 'प्लेटो का आदर्श राज्य', लोकभारती प्रकाशन।
5. डॉ. हरीश चंद्र वर्मा, 'प्लेटो का राजनीतिक सिद्धांत', नंदन पब्लिकेशन।
6. रामनाथ शर्मा, 'पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन।
7. डॉ. योगेश कुमार, 'राजनीतिक सिद्धांत और प्लेटो', प्रकाशन संस्थान।
8. बी. एन. राय, 'प्लेटो और आधुनिक राजनीति', ज्ञान गंगा प्रकाशन।
9. अटल बिहारी वाजपेयी, 'प्लेटो और भारत का लोकतंत्र', प्रभात प्रकाशन।
10. रमेश सिंह, 'राजनीति विज्ञान में प्लेटो के योगदान', अरिहंत पब्लिकेशन।
11. सत्यप्रकाश त्रिपाठी, 'प्लेटो और न्याय की अवधारणा', भारतीय विद्या प्रकाशन।
12. सुनील कुमार, 'प्राचीन राजनीतिक विचारक, प्लेटो से अरस्तू तक', हिंदी साहित्य सदन।
13. कमलेश वर्मा, 'प्लेटो का गणराज्य और आधुनिक राज्य', यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 02, February 2024

14. राहुल सक्सेना, 'प्लेटो, एक दार्शनिक अध्ययन', सेंट्रल बुक हाउस।
15. डॉ. प्रेमचंद गुप्ता, 'यूनानी राजनीतिक विचार, प्लेटो और अरस्तू', भारतीय प्रकाशन।
16. मनीष तिवारी, 'राजनीतिक दर्शन का इतिहास, प्लेटो से मार्क्स तक', विद्या प्रकाशन।
17. रामकिशन यादव, 'प्लेटो और सुशासन की अवधारणा', लोकहित प्रकाशन।
18. गोपाल शर्मा, 'प्लेटो के सिद्धांत और भारतीय राजनीति पर प्रभाव', ज्ञानदीप प्रकाशन।
19. विकास मिश्रा, 'प्लेटो का आदर्श राज्य और आधुनिक यथार्थवाद', अनामिका पब्लिकेशन।
20. नरेंद्र वर्मा, 'प्लेटो और नैतिक राजनीति', हिंदी साहित्य भवन।
21. अमित सिंह, 'गणराज्य का सिद्धांत, प्लेटो से आधुनिक युग तक', शोध संस्थान प्रकाशन।